भजन

तर्ज::भरी दुनिया में आखिर

तेरा दर छोड़ कर रुहें, कहीं जाना न अब चाहे
जिन्हें पहचान हो गई है, उन्हें माया न अब भाए

1) सुना है जिसने दिल देकर, अखंड है अपना वो निजघर
जुदा ना हो जहाँ कोई, वहां जाने को जी चाहें

2) नजर पीछे ना उसने की, पिया की राह जिसने ली
फना अपने धनी पे वो, धनी अपने को अब चाहे

3) कसर कोई नहीं रखी, पिया तुमने तो कहने में
जो रूह होगी अर्श की वो तो अब रहनी मे आ जाऐ

4) न पर्दा है कोई अब तो, राज सारे बताये है
समझ में जिनकी उन जाऐ, जुदा अब वो न रह पाए